माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 26 जुलाई, 2017 को डी0ए0वी0 कालेज, चण्डीगढ में जम्मू–कश्मीर स्टडी सेंटर द्वारा आयोजित कारगिल विजय दिवस समारोह में दिया गया भाषण

आज का उत्साह से भरा हुआ, विजय का संदेश देने वाला, यह वीरता से परिपूर्ण आयोजन, जम्मू–कश्मीर शहीद सैन्टर के द्वारा किया गया है। इसके मान्यवर अध्यक्ष पद्म श्री जवाहर लाल जी कौल, हमारे बीच में दो महत्वपूर्ण सेना के अधिकारी बैठे हैं, जिनका हमने मार्गदर्शन भी प्राप्त किया है, मान्यवर लेफ्टिनेंट जनरल बी0एस0 जसवाल जी, लेफ्टिनेंट जनरल के0 जे0 सिंह और जिस स्थान पर यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है उस डी.ए.वी. कॉलेज के प्राचार्य श्री बी.सी.जोशन जी, हम सब के बीच में हम सबके लिए महत्वपूर्ण शहीदों के परिवार यहाँ पर उपस्थित हैं मैं उन सबके सामने उन सपूतों को याद करते हुए, श्रद्धांजलि देते हुए खुद को नतमस्तक करता हूँ, अन्य सभी वरिष्ठ जन, नौजवान साथियो!

डी.ए.वी. कॉलेज की परंपरा है कि ये पढ़ने वाले छात्रों को सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते, वे पढ़ने वाले छात्रों का चरित्र भी निर्माण करते हैं, राष्ट्रभक्तों का निर्माण करते हैं और जो परिस्थिति है उस परिस्थिति का मुकाबला कर सकें, जो प्रश्न राष्ट्र के सामने खड़े हैं उनका ठीक उत्तर दे सकें, ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते हैं।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने भी वही किया था। देश उस समय गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था और सब तरफ पराजय का, निराशा का, संकीर्णता का और अपनी लघुता का लोग आभास कर रहे थे। उस समय उन्होंने शिक्षा को चुना। लक्ष्य था कि शिक्षा के माध्यम से ऐसे लोग तैयार करेंगे जो इस परिस्थिति में जो प्रश्न हैं उनका जवाब दे सकें।

यह डी.ए.वी. कॉलेज उसी उद्देश्य को पूरा कर रहा है और उसी धारा में बह रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि यहाँ पर जिन चार शहीदों की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं, परमवीर चक्र कैप्टन विक्रम बत्रा, वीर चक्र कैप्टन विजयंत थापर, महावीर चक्र लफ्टिनेंट राजीव संधू और मेजर संदीप सिंह। इन प्रतिमाओं को स्थापित करने का मतलब ही यह है कि जो भी यहाँ पर पढ़ने आएगा, इन प्रतिमाओं को देखेगा, इनके बारे में पूछेगा और इनके बारे में जानेगा और इनके बारे में जानकर वह अपना उद्देश्य तय करेगा कि यह जीवन है किस बात के लिए।

जम्मू–कश्मीर स्टडी सैन्टर है तो जम्मू–कश्मीर के नाम से, लेकिन मैं आप सबको निवेदन करना चाहता हूँ कि जम्मू–कश्मीर अपने राष्ट्र के अंदर एक निर्भय सुरक्षा है। यह जो पूरा राष्ट्र है, इसको राष्ट्र–पुरूष के रूप में माना गया है। जैसे पुरूष होता है और उसके विभिन्न अंग होते हैं, वैसे ही हमने इस राष्ट्र को परिभाषित किया है। इस राष्ट्र को राष्ट्र–पुरूष परिभाषित करते समय कहा गया है कि यह जो हमारा राष्ट्र है– हिमालय इसका मस्तक है। और अगर हिमालय मस्तक है तो कश्मीर हमारा किरीट है, कश्मीर हमारी शान है। अगर इसका या किसी राजा का आप मुकुट उतार दें तो वह कितना अपमानित होता है। इसलिए इस राष्ट्रपुरूष में अगर हिमालय मस्तक है तो कश्मीर हमारा किरीट है।

इस राष्ट्र–पुरूष की पंजाब और बंगाल दो भुजाएं हैं, दिल्ली इसका दिल है, विंध्याचल इसकी कमर है, नर्मदा इसकी करधनी है, पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट ये दो इस राष्ट्र–पुरूष की विशाल जंघाएं हैं। यह ऐसा राष्ट्र–पुरूष है, हिन्द महासागर जिसके चरण पखारता है। हिन्द महासागर इसके चरणों को धोता है। हम सब इस राष्ट्र के वासी हैं और ऐसा मानते हैं कि इस राष्ट्र की बूंद–बूंद गंगाजल है। चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं। इस देश का ज्ञान और इस देश की संस्कृति पूरे विश्व को आलोकित करती है, मार्गदर्शित करती है। और हम हमेशा यह प्रण लेते हैं कि हम जीएगें तो इसके लिए और मरेंगे तो इसके लिए। इसलिए सब समझ सकते हैं कि जम्मू–कश्मीर जो हमारा किरीट है वह हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है।

जम्मू–कश्मीर स्टडी सैन्टर इस बात को लेकर विभिन्न स्थानों पर जाकर पूरे देश में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। उसी क्रम में हमारे देश के अन्दर 1999 में जो घटना घटी, कारगिल–टाइगर हिल, उसका विजय दिवस, किस तरह से हमने विजय प्राप्त की, उसको याद करना और विजय प्राप्त करने के लिए जो शहीद हो गए, उनकी शहादत को स्मरण करना, उनको श्रद्धांजलि देना और उनके प्रति और सेना के प्रति, सेना के परिवारों के प्रति हमारा क्या कर्तव्य बनता है, उसको याद करना, अपने हृद्य के अन्दर उसको स्थापित करना। कारगिल विजय का पूरे विश्व के लिए सबसे बड़ा संदेश है।

यहाँ सबने बताया कि कारगिल के अंदर इतनी ऊँचाई पर धोखे से पाकिस्तान की सेना पहुँच गई थी, ठण्ड़ के दिनों में हमारी सेना उस क्षेत्र को छोड़ देती है, उसका फायदा उठाकर पाकिस्तान उस ऊँचाई पर पहुंच गया। और जब हमें पता लगा कि वह ऊँचाई हैं और हम नीचे हैं और ऐसी स्थिति में

उनको खदेड़ना, उनसे वह स्थान फिर से छीन लेना, कितनी हिम्मत का काम है, वीरता का काम है। इसलिए तो कारगिल का विजयी दिवस सबसे पहले तो पूरे विश्व के लिए संदेश है कि भारत की प्रकृति यह है कि वह पहले किसी पर आक्रमण नहीं करता। आप पूरे विष्व के इतिहास के कहीं से भी पन्ने पलट लीजिए कहीं पर भी ऐसा नहीं मिलेगा कि भारतवर्ष ने किसी के ऊपर सैन्य बल से आक्रमण किया हो।

सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब ओर जरूर गए हैं। संस्कृति का प्रचार–प्रसार जरूर किया है। पूरे विष्व के अंदर कोई ऐसा देष नहीं है जहाँ भारत नहीं गया है, भारत के संन्यासी नहीं गए हैं। और अगर कहीं कोई अनर्थ हुआ है तो भारतवर्ष के संन्यासियों ने जाकर, हमारी संस्कृति का संदेष देकर, संस्कृति के बाहर कौन है, पूरे विष्व को मानवता का, सहिष्णुता का, षान्ति का और अहिंसा का पाठ सिखाया है। लेकिन सैन्य बल से भारतवर्ष ने किसी पर आक्रमण नहीं किया।

कभी आक्रमण करने का मौका भी आया तो कभी भी उस जगह पर कब्जा जमाने का स्वार्थ हमने नहीं जगाया। भगवान राम ने भी जब लंका को जीता तो लक्ष्मण के कहने पर और निवेदन करने के बाद भी खुद राज वहाँ पर नहीं किया। उन्होंने कहा कि कहाँ जा रहे हो, भरत 14 वर्ष तक वहाँ पर रहे हैं, उनको राज करने दो। यह सोने की लंका है। उस समय राम ने कहा था कि

अपि स्वर्णमयी लंका, न में लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी।।

तो लंका को हमने उस समय जीता जरूर था, जेकिन राज नहीं किया। राज वहीं दे दिया विभीषण को। 1971 में बांग्ला देश की लड़ाई में विजय प्राप्त हमने की, आप चाहते तो बांग्ला देश को ले सकते थे, क्योंकि जीता तो आपने था, 99 हजार पाकिस्तानी सैनिकों का सरैंडर, वह कितनी बड़ी जीत थी, लेकिन आप ने उसे जीतकर के उसे शेख मुजीबर रहमान को दे दिया।

तो अगर कभी मौका भी आया है तो अभी भी हम चीन के साथ जो झगड़ा चल रहा है, भूटान पर वो कब्जा करना चाह रहे हैं, डोकलाम में दोनों सेनाएँ खड़ी हैं। वह भुटान का हिस्सा है। भारत ने यह जरूर किया है कि दूसरे के लिए लड़ाई जरूर लड़ी है लेकिन हमने कभी कब्जा नहीं किया। यह भारत है और यदि कोई हिम्मत करता है, भारत पर युद्ध थोपने की, और सैन्य बल के आधार पर विजित करने की, इसके क्षेत्र को हथियाने की, तो वही होगा जो

कारगिल में हुआ था। वही होगा जो 1965 में हुआ था और वही होगा जो 1971 में हुआ था।

इसलिए कारगिल का जो विजय दिवस है वह पूरे विश्व के लिए संदेश है। साथ ही हमारे देश के लिए भी संदेश है। अगर देश के लिए सबसे बड़ी अभिलाषा कोई अगर हो तो वह होनी चाहिए कि हमारा राष्ट्र ही सब कुछ है। राष्ट्र सर्वोपरि है। किसी भी कोने से, किसी भी तरफ से, कहीं से भी राष्ट्र के ऊपर अगर संकट आता है तो अपने सारे संकट अलग रखकर उस संकट का सामना करने के लिए संपूर्ण देश को एक होना चाहिए, एक जुट होना चाहिए। यह उदाहरण हमारे देश ने हमेशा दिया है। लेकिन यह संदेश भी अपने स्थान पर आना चाहिए, नौजवानों को यह सब पता होना चाहिए। इसलिए यह संदेश सभी देशवासियों के लिए होना चाहिए जो कारगिल विजय दिवस के माध्यम से हमारा जम्मू–कश्मीर स्टडी सैन्टर देना चाह रहा है।

एक तीसरी महत्वपूर्ण बात और है और वह यह है कि मरना तो सबको है, क्या कोई गारंटी दे सकता है कि वह नहीं मरेगा, यद्यपि डरते जरूर हैं सब मरने से। लेकिन मरना तो सबको है। लेकिन सबसे अच्छी मौत कौन सी है? सबसे अच्छी मौत कौन सी है, इसका जरा विचार करो।

मैंने एक इंग्लिश राइटर का लेख पढ़ा था। मैं जो कहना चाहता हूँ वह बात तो नहीं थी, लेकिन उसमें एक बहुत अच्छी बात थी। उसने यह कहा कि आप कोई भी साहसिक काम करने से क्यों डरते हैं? साहसिक काम करने से क्यों डरते हैं ? कहीं आपकी जान न चली जाए। कई बार ऐक्सिडेंट हो जाता है तो आप सोचते हैं, यह वहाँ क्यों गया था, ऐक्सिडेंट हो गया। और भी कई चीजें ऐसी होती हैं जिसमें मनुष्य की मौत होती है। लेकिन वह उस लेख में बहुत सुंदर बात लिखता है। उसने कहा कि मैंने विश्लेषण किया कि अकारण जो मौतें होती हैं उनकी संख्या कितनी है? और चारपाई पर लेटे–लेटे मौत होती है, वह संख्या कितनी है ? तो उसने कहा कि चारपाई पर लेटे–लेटे मौत कई गुणा ज्यादा होती हैं। तो इसलिए अगर चारपाई पर लेटे–लेटे मौत कई गुणा ज्यादा होती हैं तो हम साहसिक काम करने से डरते क्यों हैं ? मौत तो होनी ही है तो चारपाई पर लेटे–लेटे क्यों ?

लेकिन मैं जो बात कहना चाहता था वह यह है कि वास्तव में अच्छी मौत कौन सी है? भारतवर्ष महर्षि दधिचि का देश है। महर्षि दधिचि को हम क्यों याद करते हैं? क्योंकि पुराने काल में राक्षसों का ओर देवताओं का बहुत युद्ध होता था। देवता और दानव, इनका बहुत युद्ध होता था। अपने देश में कई युद्ध तो

राक्षसों को समाप्त करने के लिए ही हुए हैं। राक्षस न्याय को, शान्ति को, अपने धर्म को और अपने कर्त्तव्य को समाप्त करने वाले थे।

इसलिए जब राक्षसों का प्रभाव ज्यादा बढ़ गया तो सारे देवता मिलकर इन्द्र के पास, ब्रह्मा जी के पास गए ओर कहा कि हमें बचाओ। उस समय एक भस्मासुर नाम का राक्षस था। जो विश्वकर्मा जी हैं, हमारे यहाँ विश्वकर्मा जयंती भी मनाते हैं, यह जो निर्माण का काम करते हैं, कंस्ट्रक्शन का काम करते हैं, वे बहुत अच्छे इंजीनियर थे। विश्वकर्मा जी उसी भस्मासुर के परिवार के हैं। अब कहाँ विश्वकर्मा जी और कहाँ वह भस्मासुर। तो जब सब देवता गए तो उनको यह बताया गया कि भस्मासुर को अगर खत्म करना है, मारना है तो उसका एक ही तरीका है कि एक वज्र बनाया जाए। और वह वज्र किसी ऐसे संन्यासी की हड्डियों से बनाया जाए जिसने अपनी हड्डियों को अपनी तपस्या और साधना से इतना मजबूत कर लिया है कि वे टूटेंगी नहीं। और ऐसा अपने देश में एक ही संत है और वह है दधिचि। दधिचि के पास जाओ ओर उनसे हड्डियाँ मांगो।

दूसरी बात उन्होंने कही कि हड्डियाँ तो ले लोगे, शायद वो दे दें। लेकिन उनसे जो वज्र बनाया जाएगा उसमें चूक नहीं होनी चाहिए। वह वज्र शुद्ध होना चाहिए, Appropriate होना चाहिए, कोई चूक नहीं होनी चाहिए और उस वज्र का प्रहार जब उस राक्षस पर होगा तब वह राक्षस मरेगा। फिर उन्होंने कहा कि अगर महर्षि दधिचि तैयार हो जाएं तो फिर विश्वकर्मा जी से निवेदन करना पड़ेगा कि वे उस वज्र को बनाएं।

पूरा वृतांत इस तरह का है कि महर्षि दधिचि को जब यह कहा गया कि राक्षसों को समाप्त करने के लिए उसका सेनापति, उसका नेतृत्व करने वाला, उनके नेता भस्मासुर को समाप्त करना है तो आपकी हड्डियों की जरूरत है। और हम जानते हैं कि महर्षि दधिचि ने कहा था कि आप जग की रक्षा के लिए, समाज की रक्षा के लिए, राष्ट्र की रक्षा के लिए, आप सबके अस्तित्व के लिए मैं अपनी हड्डियाँ देने के लिए तैयार हूँ। महर्षि दधिचि ने मौत स्वीकार की और हड्डियाँ इस काम के लिए दान में दे दी। तो सही मौत तो यह है।

आज के जमाने में लोग शरीर का अंगदान करने में सकपकाते हैं। आज अपने देश में जितनी किडनी की जरूरत है, जितनी आँखों की जरूरत है, जितने हार्ट की जरूरत है उतने लोग दान नहीं करते। उनको प्रोत्साहित करने की जरूरत है। लेकिन महर्षि दधिचि ने तो इसको सुनकर अपनी हड्डियाँ ही दे दीं और जब विश्वकर्मा जी के पास गए, तो भस्मासुर तो विश्वकर्मा जी के परिवार से ही था, विश्वकर्मा मना भी कर सकता था। आज तो परिवार के लिए

आप पता नहीं क्या–क्या कर सकते हैं, कितने षडयंत्र करते हैं। बहुत सारी खबरें मिलती हैं, परिवार क्या–क्या कर रहा है? लेकिन उसमें वह का भाव नहीं था। विश्वकर्मा जी सहर्ष तैयार हुए और महर्षि दधिचि की हड्डियों से विश्वकर्मा जी ने वज्र बनाया और उस वज्र से प्रहार हुआ तब उस भस्मासुर को समाप्त किया गया। इसलिए जो आदर्श मौत है वह तो महर्षि दधिचि जी की थी। इस तरह की जितनी मौतें हैं और इन सबका अगर आप विश्लेषण करेंगे तो वह मौत सबसे श्रेष्ठ मानी जाएगी जो देश के लिए होती है।

अपने लिए जीए तो क्या जीए, अपने लिए तो पशु भी जीते हैं, जीव–जंतु भी जीते हैं, पक्षी भी जीते हैं। सही जीना तो वह है कि आप दूसरों के लिए जीएं। मैथिलिशरण गुप्त जी ने तो बड़ी अच्छी बात कही है कि –

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर पशु निरा है और मृतक समान है।

यह राष्ट्र के लिए मैथिलिगुप्त जी ने संदेश दिया। यह इसलिए संदेश दिया है कि मौत तो आनी ही है, लेकिन मौत दूसरों के लिए आए। देश की रक्षा के लिए आए और इसलिए जो सेना देश की सरहदों की रक्षा के लिए लगी हुई है और जो देश के लिए शहीद होते हैं, वे श्रेष्ठ हैं। हम आज यहाँ जो कारगिल विजय दिवस मना रहे हैं, उन शहीदों के प्रति अपनी पुण्य श्रद्धांजलि अर्पित करें और उन परिवारों के प्रति नतमस्तक हो रहे हैं जिन्होंने ऐसे सपूतों को जन्म दिया है जो राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने को बलिदान कर गए और देश से कुछ माँगा नहीं।

तेरा वैभव अमर रहे माँ, यह भारत ही एक ऐसा देश है जो अपनी भूमि को माँ मानता है। पृथ्वी माता पुत्रो अहम् पृथिव्या। यह पृथ्वी हमारी माँ है और हम इसके पुत्र। वन्दे मातरम। वन्दे मातरम। यह जो भाव है, इस भाव से हमारे शहीद देश के लिए कुर्बान होते हैं। उनको विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए, इस भाव को लेकर अगर हम जीएंगे तो आप दूसरों के लिए आदर्श बनेंगे, आप पूजनीय बनेंगे और आपका जीवन निश्चित रूप से सार्थक होगा। पुनः इस डी0ए0वी0 कालेज के लिए और खासकर जम्मू–कश्मीर स्टडी सैन्टर के लिए धन्यवाद प्रेषित करता हूँ कि इस तरह का भाव भारतवर्ष के अंदर आप अपने कार्यक्रमों के माध्यम से नौजवानों में जगा रहे हैं।

बहुत–बहुत धन्यवाद!